जुड़ी रहती है। भारतवर्ष में विभिन्न भाषा, बोली और संस्कृति को सहेजे विभिन्न अंचल की खुशबू के साथ वहाँ संस्कृति, रीति–रिवाज, परम्परा और लोक साहित्य और लोककला में प्रदर्शित होती है।

छत्तीसगढ़ के सहज, सरल लोगो की स्वछंद लोकसंस्कृति और छत्तीसगढ़ी भाषा की मिठास को रंगमंच के माध्यम से विश्वविख्यात करने में हबीब तनवीर का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने छत्तीसगढ़ लोकसंस्कृति के साथ भारतीय और पाश्यचात्य रंगशैलियों के मिश्रण से समकालीन रंगमंच को समृद्ध किया है। वस्तुतः हबीब तनवीर अपनी जड़ों से जुड़े हुए थे। जिसे वह ताउम्र रंगमंच पर निभाते भी रहे। इसीलिए पाश्चात्य रंग परम्परा के गंभीर अध्येता होने के बावजूद उनकी प्रस्तुतियों में छत्तीसगढ़ी लोकजीवन का सीधा साक्षात्कार होता है।

संदर्भ सूची :–

1. प्रितपाल अरोरा – इतिहास पुरूष हबीब तनवीर/चेतना 2010/पृ. 59
2. भास्कर चंदावरकर – रंगसंगीत/कलावार्त्ता/जु.सि. 2006/पृ. 13
3. गिरीश रस्तोगी – हिन्दी रंगमंच आंदोलन के अवरोधी तत्व/नया प्रतीक जून 1975/पृ. 72
4. महावीर अग्रवाल – प्रणति मंचीय सफर की आधी सदी/रंग संवाद/अक्टू.दिसं. 99
5. हबीब तनवीर – अपनी जमीन की महक ही अलग होती है/साक्षा.–म.अग्र./सापेक्ष–47/पृ. 124
6. डॉ. अजय कुमार शुक्ल और खुशबू सिंह – छत्तीसगढ़ लोकनाट्य और हबीब तनवीर का रंगकर्म, राष्ट्रीय सम्मेलन पत्रिका, कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर (छ. ग.) ISBN – 978-93-88867-88-7.
7. भारत रत्न भार्गव– हबीब तनवीर अनोखे रंगकर्मी हैं/साक्षा.–म.अग्र./सापेक्ष–47, पृ. 309
8. महावीर अग्रवाल– परम्परा और आधुनिकता का समन्वय/सापेक्ष–47/पृ.20
9. नामवर सिंह– सार्थक प्रयोग के अग्रणी/साक्षा.–म.अग्र./सापेक्ष–47, पृ.290
10. वही–पृ. 290
11. हबीब तनवीर– अपनी जमीन की महक ही अलग होती है। साक्षा.–म.अग्र./सापेक्ष–47, पृ. 32
12. हबीब तनवीर– नाटक का नाभिकेन्द्र कहां है। सा.–म.अ./सापेक्ष–47/पृ. 35
13. हबीब तनवीर– रास आएगा तनवीर इसी मुल्क का मौसम/सापेक्ष–47, पृ.60
14. महावीर अग्रवाल– हबीब तनवीर का रंग संसार/कला समय अ. 99 सि. 2000
15. वही – पृष्ठ 42
16. महावीर अग्रवाल– नाटक का नाभिकेन्द्र कहॉ है/सापेक्ष–47, पृ. 29